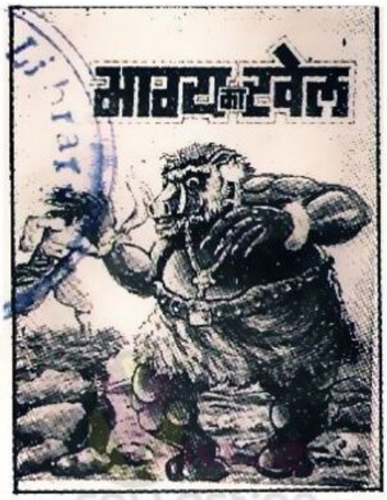


http://www.orkut.co.in/Main#Community?cmm=97630164
तुलसी
कॉमिक्स
संख्या 120 मू[redacted]
मौत का खेल
TRSH-SHILP 91.
http://vintagecollectionforall.blogspot.com/

तुलसी कॉमिक्स

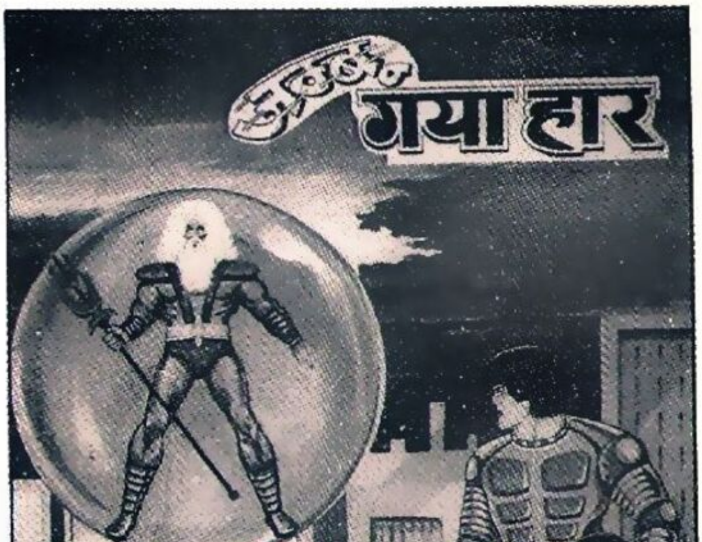
के आगामी छः नये कॉमिक्स













भाग्य का खेल

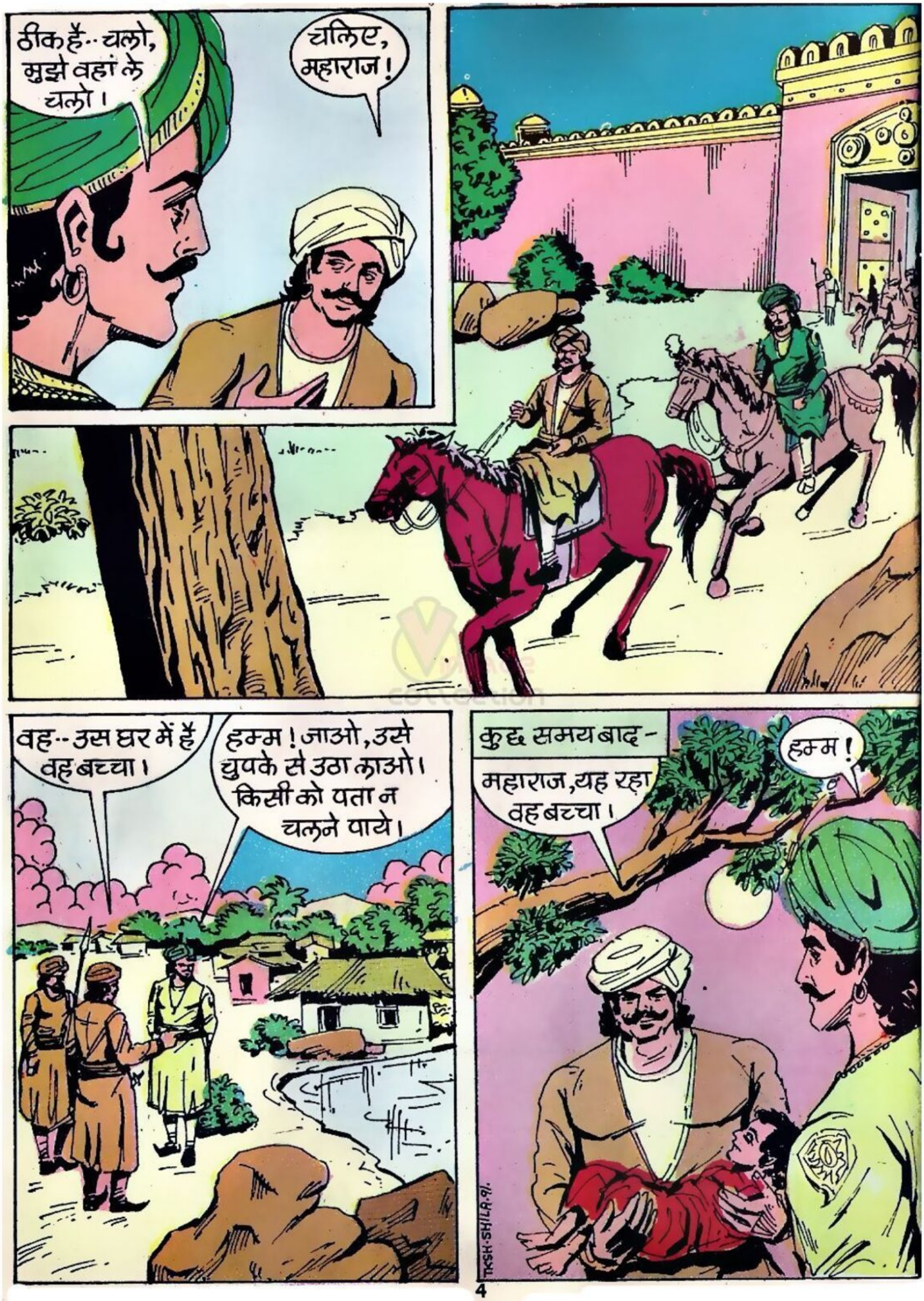
संपादन ✫ प्रमिला जैन • | कथा ✫ आशीष रानू • | चित्र ✫ तक्षशिला •



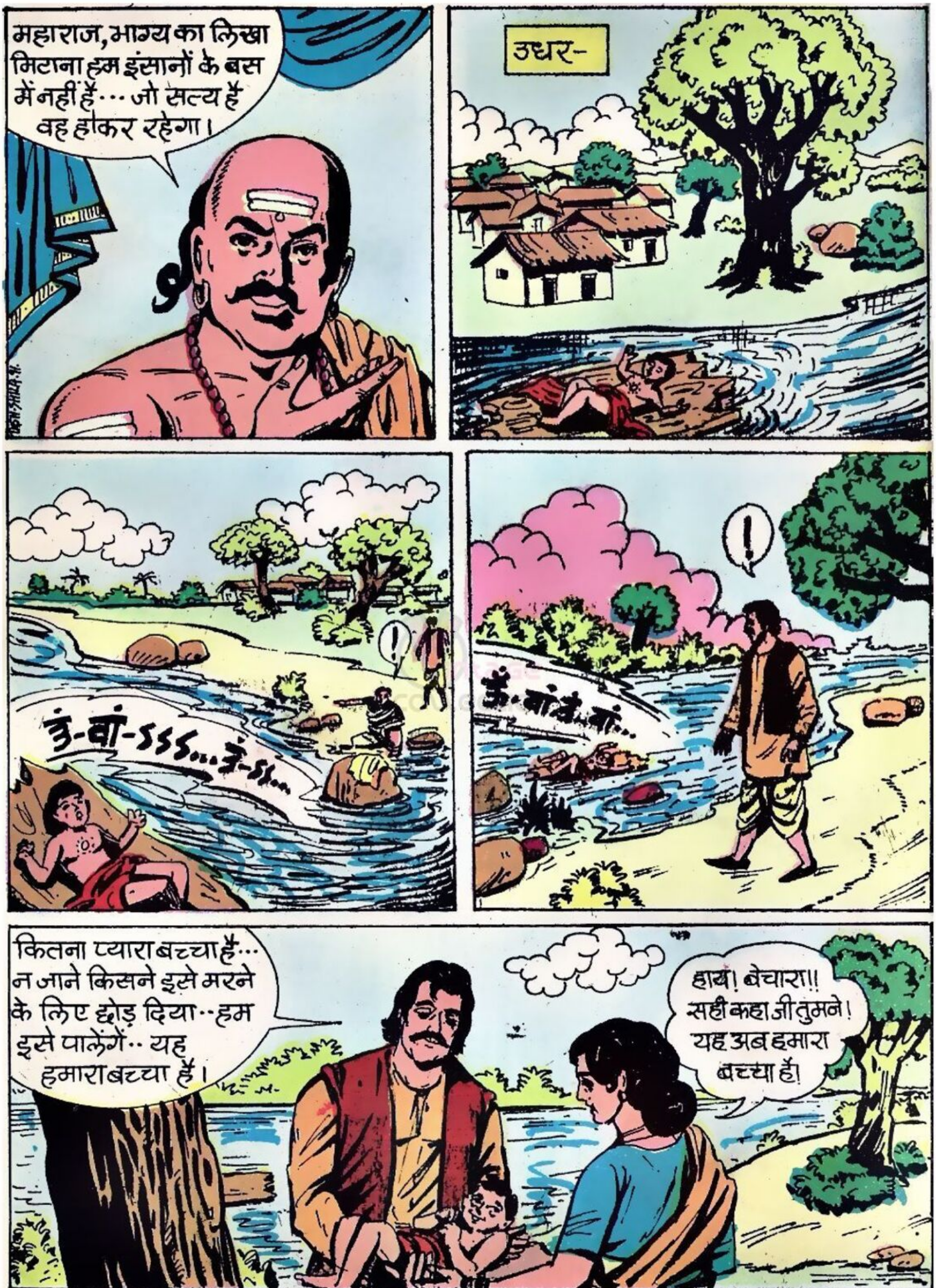


सारे नगर में जश्न मनाया गया –
देखते - देखते एक साल निकल गया –
एक दिन –
महाराज, राजकुमारी का भविष्य उज्जवल है। राजकुमारी साक्षात लक्ष्मी हैं।
राजकुमारी रजनी के ब्याह के बारे में कुछ बताएं ?
राजकुमारी का ब्याह एव नेक व बहादुर इंसान से होगा। उस इंसान के सीने पर सूर्य का चिन्ह बना है वह बहुत बुद्धिमान व ताकतवर होगा परन्तु
परन्तु क्या, राजपुरोहित जी ?
राजकुमारी के पति किसी राज घराने के नहीं होगें बल्कि वे एक गरीब किसान के पुत्र होंगे।
यह आप क्या कह रहे हैं ?
मैं सत्य कह रहा हूं, महारा यह सच है जो भविष्य को हकीकत में बदलकर रहेगा।


मेरी बेटी की शादी एक किसान से नहीं हो सकती है... राजपुरोहित जी, मैं इस सत्य को बदल दूंगा।
महाराज, जो भाग्य में है वह अटल है।
आप देखते रहिए मैं कैसे भाग्य में फेर-बदल करता हूं।
!
उसी रात-
वह बच्चा जहां भी हो, उसका पता लगाओ.. वह एक दो साल का लड़का है। उसके सीने पर सूर्य का चिन्ह बना है। जाओ!
जो हुक्म!
महाराज, आप यह क्या करने जा रहे हैं? मुझे महसूस हो रहा है कि आप कोई अनर्थ करने जा रहे हैं।
रानी, तुम चुप रहो.. मुझे जो करना है वह गलत नहीं है।
कुछ समय पश्चात-
महाराज, वह बच्चा मिल गया है.. वह नदी किनारे बसे रामू किसान का बेटा है। उसके सीने पर सूर्य का चिन्ह है।


ठीक है.. चलो, मुझे वहां ले चलो।
चलिए, महाराज!
वह.. उस घर में है वह बच्चा।
हम्म! जाओ, उसे चुपके से उठा लाओ। किसी को पता न चलने पाये।
कुछ समय बाद -
महाराज, यह रहा वह बच्चा।
हम्म!


हा, हा हा -- यही है वह बच्चा।
हा हा हा --अब देखता हूं यह कैसे मेरी बेटी से विवाह करता है--!
उं-उं-वां...
!!
हा हा हा
उं-वां
परन्तु
अगले दिन-
राजपुरोहित जी, हमने भाग्य के लिखे को बदल दिया है। अब हमारी बेटी से वह किसान का बेटा शादी नहीं कर सकेगा।
?
!


महाराज, भाग्य का लिखा मिटाना हम इंसानों के बस में नहीं है··· जो सत्य है वह होकर रहेगा।
उधर-
!
उं-वां-ऽऽऽ...उं-ऽऽ...
!
कितना प्यारा बच्चा है··· न जाने किसने इसे मरने के लिए छोड़ दिया··हम इसे पालेंगे·· यह हमारा बच्चा है।
हाय! बेचारा!! सही कहा जी तुमने! यह अब हमारा बच्चा है!


आहिस्ता-आहिस्ता कई साल बीत गए।
उधर-
हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं, बेटे पुनीत।
जुग-जुग जिओ, मेरे लाल।
TKSH-SHILR-91



एक दिन -
सुनो -- सुनो -- सुनो -- राजा जी ने एक कुश्ती का मुकाबला बैठाया है .. जो उसमें भाग लेना चाहे वह कल सवेरे राजमहल के बाहर आ जाए।
दम! दम! दम दम!
जीतने वाले को एक हजार सोने की मोहरें दी जाएंगी।
एक हजार सोने की मोहरें!
अगले दिन, राजमहल के बाहर -
मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे इस मुकाबले का मुख्य अतिथि बनाया है, वैभव नगर के नरेश।
मंत्रीजी, कुश्ती का मुकाबला शुरू किया जाए। बहुत अभ्यास हो चुका।
जो हुक्म, महाराज।
कुश्ती का मुकाबला शुरू किया जाए।
तुतूतू.ऊ


फिर क्या था -
हा, हा, हा -- है कोई माई का लाल जो मुझसे मुकाबला करने की हिम्मत रखता है --- हा हा हा।
बाप रे! इससे कौन लड़ेगा!
भर्ता बना देगा!
मरना है क्या?
हा हा हा.. कोई नहीं है।
यह कुछ ज्यादा ही उछल रहा है। इसको सबक सिखाना पड़ेगा।
अबे ओ, मोटे --- क्यों गला फाड़ कर चिल्ला रहा है। मुझको हरा कर देखो तो जानें।
!!
अच्छा.. आ जा बच्चे।


हक्!
याह!
करड़!
आह!
..ई..ई..ई..या..या....
हाय!
कड़ाक!
आखिर–
ई.ई.ई.ई.ऽऽ...
...या.या.या...



आज के इस मुकाबले के विजेता पुनीत को एक हजार सोने की मोहरें देंगे हमारे पड़ोसी दोस्त राजा-अजीतपाल जी।
तुम सचमुच बहादुर हो नौजवान। इस ईनाम के तुम सही हकदार हो।
धन्यवाद महाराज!
तभी-
यह इसके सीने पर क्या बना है.. यह.. तो सूर्य का निशान है।
हम्म! यह वही लड़का है.. न जाने बच कैसे गया.. कुछ न कुछ करना होगा।
उसी शाम -
महाराज! मुझे अपने राज्य एक जरूरी संदेश भेजना है.. आप उस विजेता पुनीत को बुलवा दें।
जैसी आपकी मर्जी।
कुछ समय बाद -
मुझे बुलाया है..?
खैर चलकर देखता हूं.. मां, तुम मेरी चिन्ता न करना। मैं अभी आता हूं।


पुनीत के राजमहल पहुंचने पर-
नौजवान, हमें एक बेहद जरूरी संदेश चित्रकूट भिजवाना हैं। तुम्हारे हाथों हमारा संदेश सकुशल पहुंच जाएगा
ऐसा हमारा विश्वास हैं।
जो हुक्म महाराज। आपका संदेश चित्रकूट पहुंच जाएगा आप निश्चिंत रहें।
ठीक हैं··· अब जाओ।
हा हा हा···बेचारे को मालूम नहीं कि वह मौत के मुंह में जा रहा हैं··· हा हा हा


जो कुछ भी हो हमारे हवाले कर दो।
!
मैं खुशी-खुशी तो तुमको कुछ दूंगा नहीं-- मुकाबला करके ले सकते हो तो ले लो।
यह बात है-- खत्म कर दो इसे।
टनाक! झन्न!
सांय!
टन्न!
टन्न!
ज़ज़ज़ज़ज़ ज़.....
खट्ट
आह!


इसके पास तो कुछ है ही नहीं.. न जाने किसकी रक्षा कर रहा था।
सरदार, यह देखो।
देखें इसमें क्या लिखा है।
!
?
प्रिय महामंत्री जी.
जो व्यक्ति आपके पास
यह संदेश ले कर आ रहा
है, उसकी गर्दन तुरंत ही
कटवा दो। यह मेरा आदेश
है! शीघ्रता से और गोपनी
-यता बनाए हुए यह काम
होना चाहिए!
राज
अजीत
यह कैसा संदेश है?
!
!
इस बेचारे को मालूम ही नहीं कि यह अपनी मौत की ओर जा रहा है। इसे बचाना होगा।
TKSH-SHILA.'91.
वही लिखावट.. वही हस्ताक्षर.. बस फिर ठीक रहेगा।
हम इस असल संदेश का नामो-निशान मिटा देते हैं।


कुछ समयबाद-
अब ठीक है··
इसे रखदो।
सवेरा होने पर-
ओह··आह
पता नहीं क्यों मुझ पर हमला किया उन डाकुओं ने? कोई सामान भी नहीं ले गए हैं···???
TKSH-SHILA.91.
आखिर-
चित्रकूट नगर।
चित्रकूट नगर

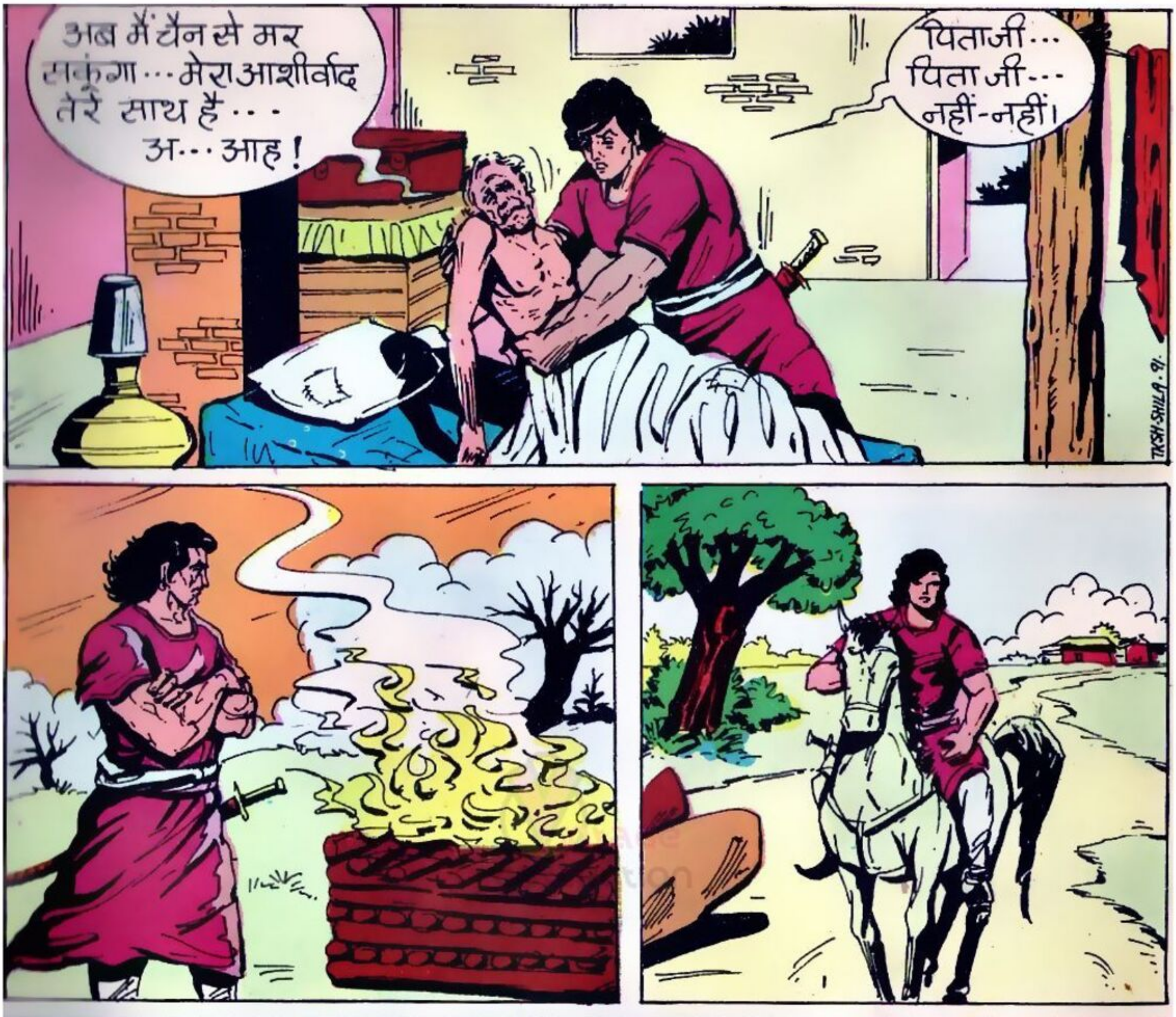

पुनीत राजा अजीतपाल का संदेश लेकर महामंत्री के पास पहुंचा –
महाराज का संदेश..?? देखें क्या लिखा है ?
प्रिय,
महामंत्री जी,
जो व्यक्ति यह संदेश आपके पास लेकर आए उससे आप राजकुमारी रजनी की सगाई करदें। यह हमारा आदेश है। शादी मैं आकर करवा दूंगा।
राजा अजीत पालसिंह
महामंत्री ने राजा अजीतपाल के संदेश व आदेश अनुसार पुनीत व राजकुमारी रजनी की सगाई करादी –


उसी शाम -
राजा अजीतपाल जब वापस लौटा -
यह जिन्दा कैसे है ?.. राजकुमारी रजनी इसके पास क्यों खड़ी है..???
अजीतपाल को मंत्री ने पूरी बात समझा दी -
नहीं..यह झूठ है। मैंने उसमें यह नहीं लिखा था.. मैंने तो लिखा था कि.. कि..क्या करूं ?
महाराज, जिसकी जोड़ी जिसके साथ बंधी है उसे तोड़ना नामुमकिन है। आपने कोशिश की परन्तु हार गए।
मैं हारा नहीं हूं.. मैं भाग्य के लिखे को बदल दूंगा। मैं जरूर कुछ करूंगा..पर क्या ?
महाराज, गुस्ताखी माफ ! परन्तु अगर आप उन्हें किसी ऐसे काम पर भेज दें जिसकी वजह से वह लौट न पाएं तो काम बन सकता है।
अरे हां...यही ठीक रहेगा।
जाइए, उस लड़के को मेरे सामने पेश कीजिए।


अगर तुम राजकुमारी रजनी से विवाह करना चाहते हो तो तुम्हें इस बात का सबूत देना होगा कि तुम राजकुमारी को खुश रख सकोगे।
!
मुझे क्या करना होगा, महाराज।
काली घाटी के आगे, नर्क ज्वाला सागर की दूसरी ओर एक चमत्कारी मणि है··· अगर तुम उसे ला दो, तो राजकुमारी रजनी तुम्हारी हुई।
आप चिन्ता न करें महाराज! मैं वह मणि लेकर जल्दी लौटूंगा।
ठीक है··अब जाओ!
महाराज, वह मणि लाना तो नामुमकिन है।
जानता हूं··· इसलिए ही तो भेजा है।
मणि हासिल करना नामुमकिन तो नहीं परन्तु हां मुश्किल है।


कुछ समय पश्चात् -
अरे, राजकुमारी रजनी.. आप ?? आपको यहां नहीं आना चाहिए था!
जानती हूं परन्तु आपको सतर्क करना मेरा फर्ज है।
राजपुरोहित ने पुनीत को पूरी बात कह सुनाई -
अगर हमारा मिलना भाग्य में ही लिखा है तो मैं वह मणि जरूर हासिल कर सकूंगा।
मैं भगवान से प्रार्थना करूंगी कि आप सफल हों, प्रियतम।
उस मणि की खोज करने से पहले मुझे एक काम करना है।
राजमहल के अन्दर -
आज से ही एक योग्य वर की तलाश कर राजकुमारी का विवाह उससे तुरन्त करा देना चाहिए.. यही ठीक रहेगा।


ऐसा हो ही नहीं सकता···नर्क ज्वाला सागर को पार करना आसान नहीं हैं। मणि की खोज करने हजारों महारथी गए परन्तु सब मारे गए ---हा हा हा!
और अगर वह सफल रहा??
उधर नदी के किनारे –
यहीं पर मेरे असली माता-पिता रहते हैं।
मां·· पिताजी·· मां··
पिताजी, मैं·· मैं, आपका खोया हुआ बेटा·· यह देखिये·· मेरे सीने पर सूर्य का निशान है।
कौन?··· कौन है?
पुनीत ने राजा अजीतपाल के किए अन्याय के बारे में उसे सब बता दिया –
बू हू हू···बेटा·· मेरा बेटा·· काश तू पहले आ जाता। तेरी मां बेचारी अब न रही और अब मैं भी जा रहा हूं।
नहीं पिता जी··· नहीं।


अब मैं चैन से मर सकूंगा ··· मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है ··· अ··· आह!
पिताजी··· पिता जी··· नहीं-नहीं।


एक रात -
तड़ तड़
तड़ तड़!
तड़! तड़! तड़!
तड़! तड़! तड़!
तड़! तड़! तड़!
तड़! तड़! तड़!
तड़! तड़ तड़!
घच्च!
तड़! तड़-तड़!
घच्च
नहीं... नहीं... मुझे मत मारो!
!


ठीक है। मैं तुम्हें छोड़ देता हूं परन्तु तुमको मेरे प्रश्न का जवाब देना होगा।
कौन सा प्रश्न?
यह काली घाटी और नर्क ज्वाला सागर कंहा है?
काली घाटी वह.. उस पहाड़ी की दूसरी ओर है और नर्क ज्वाला सागर उसके आगे। परन्तु क्यों?
मुझे वहां जाकर चमत्कारी मणि लेनी है।
चमत्कारी मणि?? अरे बाप रे बाप.. उसे हासिल करना तो नामुमकिन है
परन्तु क्यों?
क्योंकि उस मणि की रक्षा करता है राक्षसबलराज और उसके गुलाम। हजारों ने कोशिश की परन्तु सब मारे गए।
चाहे कुछ भी हो मैं उस मणि को हासिल करके ही रहूंगा।
तुम बहादुर हो-- हो सकता है तुम कामयाब हो जाओ। आओ, मैं तुम्हें काली घाटी पार करा देता हूं।
तड़-तड़-तड़!
TRISH-SHILPA


यहां से काली घाटी शुरू होती है·· तुम होशियार रहना···न जाने कहां से क्या आक्रमण हो जाए !!!
तभी–
खच!
घच्चा
घच!
घच्चा!
खच!
खटाक!
हा:!
हे-ऊ...
ही ही
यहां से नर्क ज्वालासागर शुरू होता है।
!


तभी-
?
झन्न!
झन्न!
घच्चा!
घच!
दोस्त--
दोस्त।
उस गुफा में जादुई अंगूठी है जिससे तुम इस सागर को पार··कर··कर पाओगे··· अब अलविदा!
छिपकर क्यों वार करता है, कायर? दम हो तो सामने आ--।
हम्फ़! हम्फ़!
!
?
सन्न!
सन्न!


आहः
खचाक!
?
अब क्या करोगे??
!
हुम्म!
हुम्म!
!
घच्च

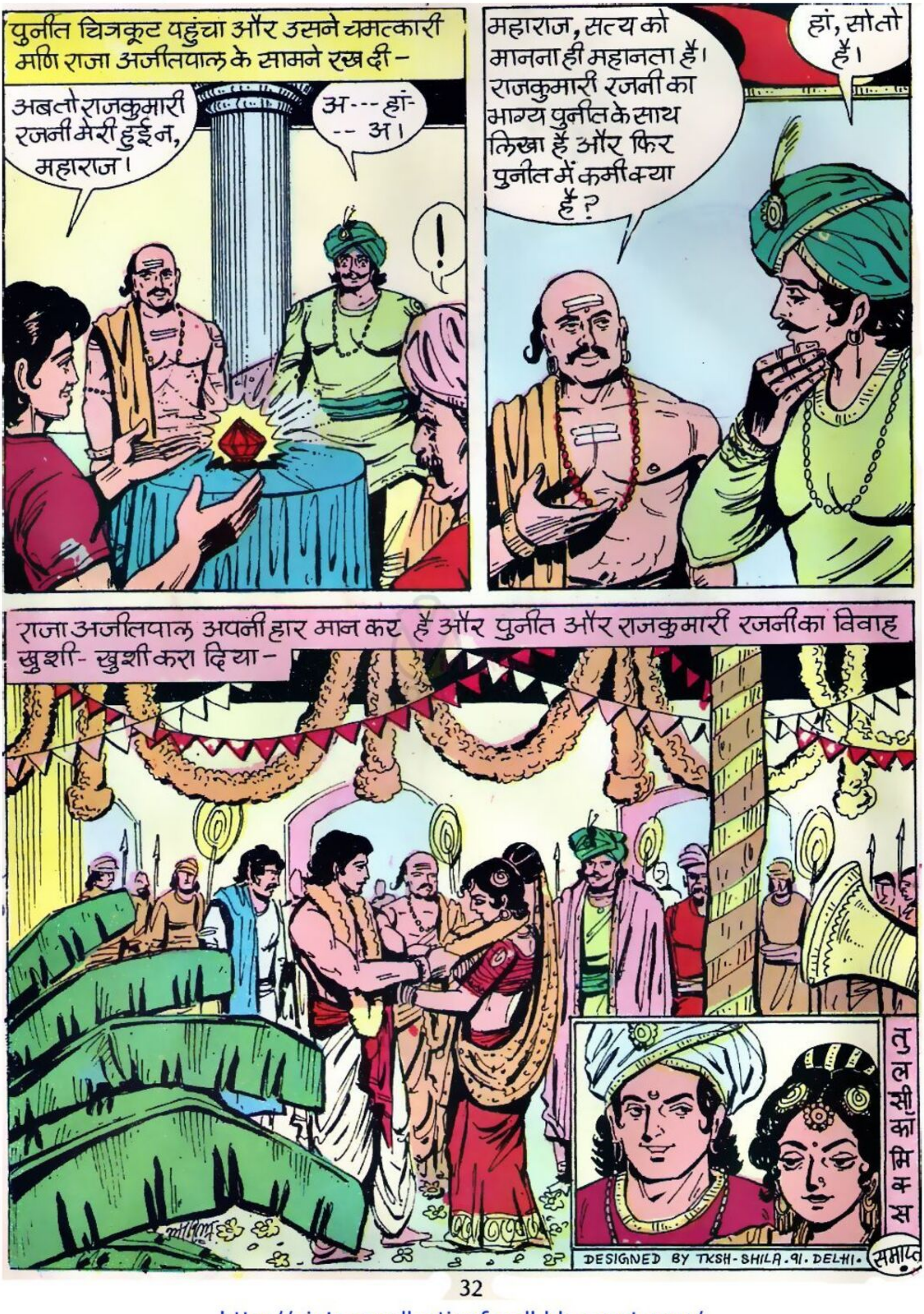

गुफा के अन्दर-
!
अब इसे पहन लूँ!
तभी-
?!
?
ताजजुब है···आग की लपटें मेरा कुछ नहीं पा रही हैं।
!


तभी-
??
तड़-तड़ तड़!
करड़!
उन फलों का रस काम आएगा।
यह सोचकर पुनीत ने अपने कपड़े उतारे और ------


पेड़ के फल तोड़ लिए और-
इससे मेरा शरीर चिकना हो जाएगा और पकड़ने पर फिसल जाएगा।
अब देखें आगे क्या है?
आगे-


कच्च!
आगे-
कच्च!
तभी-
कौन है, जो मुझे ललकारने की भूल कर रहा है?
?
राक्षस बलराज!
फिर क्या था-


खून!!
आ.आ-ऽऽऽ....
जय माता की!
आह---
आह
अद्भुत!


पुनीत चित्रकूट पहुंचा और उसने चमत्कारी मणि राजा अजीतपाल के सामने रख दी –
अब तो राजकुमारी रजनी मेरी हुई न, महाराज।
अ--- हां-- अ।
!
महाराज, सत्य को मानना ही महानता है। राजकुमारी रजनी का भाग्य पुनीत के साथ लिखा है और फिर पुनीत में कमी क्या है?
हां, सो तो है।
राजा अजीतपाल अपनी हार मान कर है और पुनीत और राजकुमारी रजनी का विवाह खुशी-खुशी करा दिया –
तुलसी कामिकस
DESIGNED BY TKSH-SHILA.91.DELHI.
समाप्त